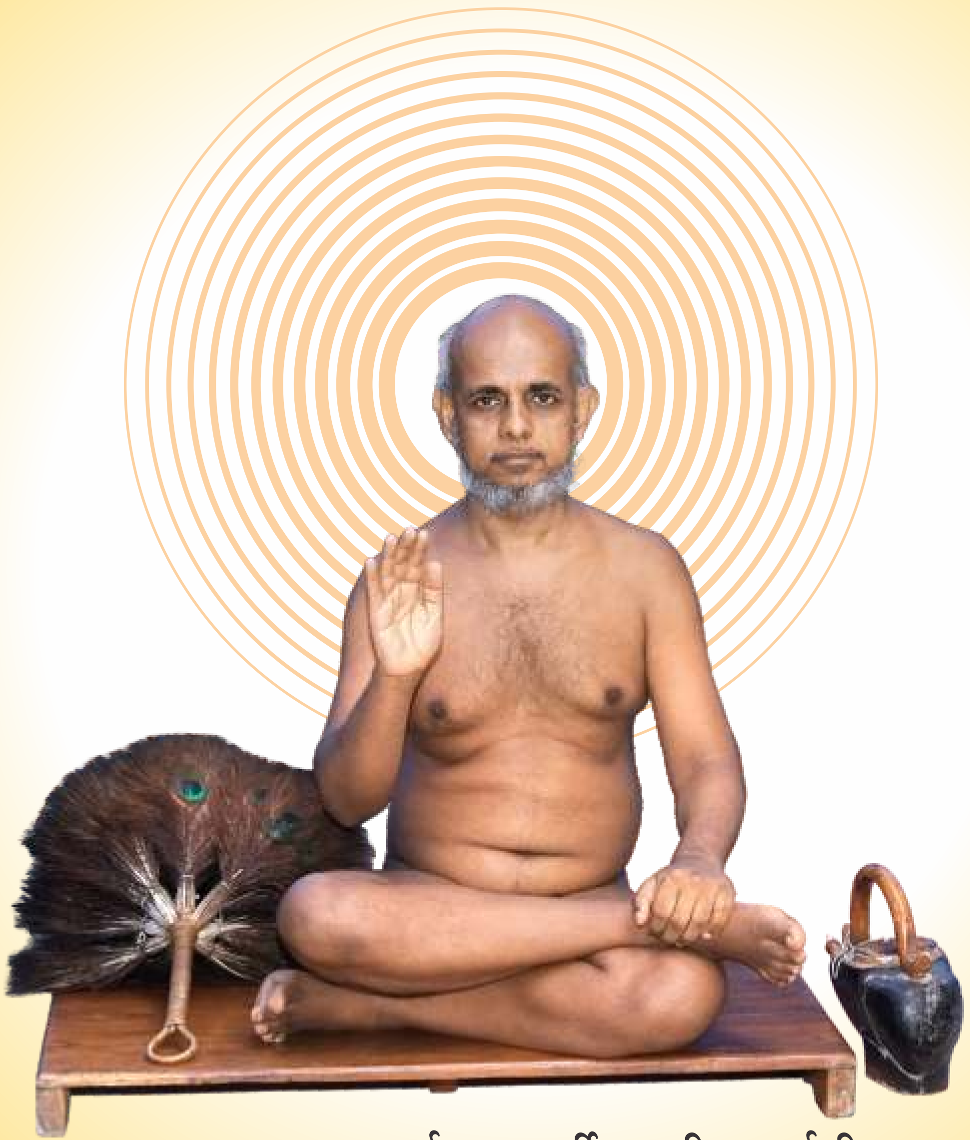

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

श्री चन्दनषष्ठी व्रत विधान

रचयित्री
पूज्या आर्यिकाश्री आस्थाश्री माताजी

प्रकाशक
श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन
धर्मतीर्थ-औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

श्री चंदनषष्ठी व्रत विधान

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

आशीर्वाद एवं संपादन

आर्ष मार्ग संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी दिगम्बर
जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार

आर्यिका आस्थाश्री माताजी

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

C/o धर्मराजश्री तपोभूमि दिगम्बर जैन ट्रस्ट, धर्मतीर्थ
पोस्ट-कचनेर (गट नं. 11-12), जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
www.jainacharyaguptinandiji.org
E-mail : dharamrajshree@gmail.com

पुस्तक का नाम	:	श्री चंदनषष्ठी व्रत विधान
आशीर्वाद	:	गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
	:	वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव
आशीर्वाद एवं संपादन	:	आर्षमार्ग संरक्षक प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव
रचनाकार	:	आर्यिका आस्थाश्री माताजी
सहयोग	:	क्षुल्लक श्री धर्मगुप्तजी, क्षुल्लक श्री श्रवणगुप्तजी क्षुल्लक श्री विनयगुप्तजी, क्षल्लिका धन्यश्री माताजी क्षुल्लिका तीर्थश्री माताजी, ब्र. केशरबाई
सर्वाधिकार सुरक्षित	:	रचनाकाराधीन
प्रकाशन वर्ष	:	2020
संस्करण	:	प्रथम- 1000
प्रकाशक	:	श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) Email : dharamrajshree@gmail.com
प्राप्ति स्थान	1.	प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ
	2.	श्री धर्मतीर्थ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 9421503332
	3.	श्री नितिन नखाते, नागपुर, 9422147288
	4.	श्री राजेश जैन (केबल वाले), नागपुर 9422816770
	5.	श्री रमणलाल साहू जी, औरंगाबाद मो. 9823182922
	6.	श्री सुबोध जैन, राधेपुरी, दिल्ली 9910582687
मुद्रक	:	राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर 9829050791 Email : rajugraphicart@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.स.	विषय	रचनाकार	पेज नं.
1.	आशीर्वाद	ग.ग. कुन्थुसागर	4
2.	शुभाशीर्वाद एवं शुभ कामनायें	वैज्ञानिक आचार्य कनकन्दी	4
3.	सर्वरोग निवारक चंदन षष्ठी व्रत	आचार्य गुप्तिनंदीजी	5
4.	इसी पढ़ें फिर आगे बढ़ें	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	7
5.	चंदन षष्ठी व्रत कथा	जैनव्रत कथा कोष से	9
6.	विनय पाठ		13
7.	पूजा आरंभ (हिन्दी)		14
8.	श्री नित्यमह पूजा		19
9.	ऋद्धि मंत्र		23
10.	चन्दन षष्ठी विधान मण्डल		24
11.	श्री चन्द्रप्रभु पूजा		25
12.	चंदनषष्ठी विधान		29
13.	विधान प्रशस्ति		45
14.	आरती		46
15.	समुच्चय अर्घ		47
16.	शांतिपाठ		48
17.	विसर्जन पाठ		49

आशीर्वाद

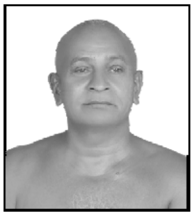

पुण्य ही जीव की सद्‌गति कराता है, सद्‌गति से मनुष्य को मोक्ष प्राप्त होता, सच्चा सुख उसी को कहते हैं। संसारी जीव को सच्चे सुख के लिये ही प्रयत्न करना चाहिए, आचार्यों ने इसीलिये देवपूजा का विधान गृहस्थों के लिये अनिवार्य किया है। सद् गृहस्थ को प्रतिदिन जिनपूजा करना चाहिए। द्रव्यपूर्वक भावपूजा करना चाहिये, पूजा पुण्यानुबंधी पुण्य कमाने के लिये है। आर्यिका आस्थाश्री माताजी ने इस **श्री चंदनषष्ठी व्रत विधान** को लिखा है, व्रत विधान करने से जीव को परम्परा से मुक्ति प्राप्ति होती है, आर्यिका आस्थाश्री माताजी का परिश्रम कब सार्थक होगा, जब सद्ग्रहस्थ व्रत करे, विधान करें। इस विधान को करके अवश्य पुण्य लाभ उठावे, ऐसा मेरा कहना है। आर्यिका आस्थाश्री माताजी को, प्रकाशक को मेरा आशीर्वाद।

–ग.ग. कुन्थुसागर

शुभाशीर्वाद एवं शुभ कामनायें

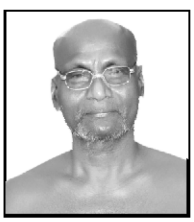

हमारे संघस्था उदयमाना कवियित्री साध्वी आस्थाश्री के द्वारा रचित चंदन षष्ठी व्रत पर विधान लिखा है। यह मानव जाति के लिए सातिशय पुण्यार्जन करायेगा। सभी भक्त इस विधान को करें एवं परम्परा से मोक्ष प्राप्त करें ऐसी मेरी शुभकामनायें हैं। साध्वी आस्थाश्री भी रत्नत्रय की साधना एवं सोलहकारण भावना के द्वारा स्व–पर विश्व कल्याण करते हुए स्वात्मोपलब्धि करें। ऐसा शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें।

–वैज्ञानिक आचार्य कनकन्दी

सर्वरोग निवारक - चंदन षष्ठी व्रत

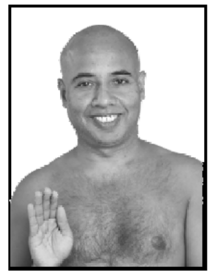

दोहा

चन्दन षष्ठी व्रत कथा,
पढ़ो-सुनो धर ध्यान।
विधी पूर्वक पालन करो,
बनो सिद्ध भगवान॥

चन्दन षष्ठी व्रत आत्म शुद्धि का व्रत है, दोषों के आलोचन कर्मों के विमोचन, कषायों के परिष्कार, दुःखों के बहिष्कार आत्मा के शोधन का व्रत है। देव-शास्त्र-गुरु के प्रति जाने-अनजाने में हुए अपराध का प्रायश्चित्त है। विशेषकर आहारदान आदि गुरु भक्ति में मन-वचन-काय की अशुद्धि से उत्पन्न दुःख और पापों के प्रक्षालन का व्रत है। इसलिए यह व्रत केवल महिलाओं या पुरुषों का व्रत नहीं है अपितु महिला/पुरुष, बालक/बालिका, युवक/युवती सभी के लिए अनिवार्य व्रत है।

इसकी व्रत कथा विधी को पढ़कर आप व्रत का अतिशय व महत्त्व समझ सकते हैं। हमारे पूर्वाचार्यों ने परम करुणा करके हमें प्रत्येक दुःख और पाप से छूटने के लिए व्रत, पूजा और विधान बताये हैं।

उनमें से एक अनूठा व्रत जो वर्ष में मात्र एक बार एक दिन ही आता है व छह वर्ष तक किया जाता वह एक दिन का व्रत भी हमारे जन्म-जन्मान्तर के रोग और दुःखों का विनाश करने वाला है।

हमारी संघस्था आर्यिका आस्थाश्री माताजी ने '**चंदन षष्ठी व्रत**' का विधान लिखा है, जो आपके समक्ष प्रस्तुत है। मधुर कंठ की धनी माताजी बचपन से ही जिन भक्ति रचना में संलग्न हैं। इससे पूर्व आपने अनेक भजन, कविता, मुक्तक, चालीसा, पूजन आदि की रचनाएँ की हैं। अब यह '**चंदन षष्ठी व्रत विधान**' की नयी रचना हुयी है। आपकी लेखनी निरन्तर चलती रहे और भी सुन्दर भजन, पूजा विधान की रचना हो। आगे एक दिन आपको जिनपूजा से परम पूज्य अर्हत् सिद्धपद की प्राप्ति हो यही मेरा शुभाशीष है।

ग्रन्थ के अर्थ सहयोगी, प्रकाशक, पूजक सभी को हमारा आशीर्वाद।

वर्धतां जिनशासनम्।

आचार्य गुप्तिनंदी

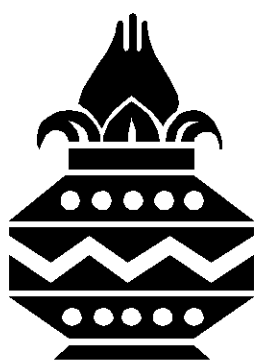

ॐ ह्रीं नमः

इसे पढ़ें फिर आगे बढ़ें

पंच कल्लाण ठाणइ, जाणि वि संजाद मच्चलोयम्मि।
मण, वयण, काय, सुद्धो, सव्वे सिरसा णमस्सामि॥

दोहा

चन्दन षष्ठी व्रत करो, पूर्ण शुद्धि के साथ।
देव-शास्त्र-गुरु को भजो, त्रय योगों के साथ॥

जिनेन्द्र प्रभु की वाणी का प्रचार-प्रसार करने वाले होते हैं दिगम्बर गुरु। ऐसे मेरे आराध्य, पूज्य वंदनीय आचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव, आचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव एवं पूज्य प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव को त्रय भक्तिपूर्वक तीनों गुरुओं को नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु ....

जैनागम में देव-शास्त्र एवं गुरु की भक्ति पूर्ण शुद्धि के साथ बताई गई है। जब जिनवाणी का अध्ययन करते हैं तो पता लगता है शुद्धि का कितना महत्त्व है और अशुद्धि का क्या दुष्परिणाम होता है। भाव के साथ-साथ द्रव्य भी शुद्ध होना चाहिये। मन के साथ वचन की शुद्धि और वचन के साथ काय की शुद्धि आवश्यक है, जब तक हमारे मन-वचन-काय शुद्ध नहीं है, पवित्र नहीं है। तब तक ऐसी अशुद्ध अवस्था में यदि हम जिनेन्द्र प्रभु की आराधना करते हैं तो घोर असातावेदनीय कर्म का बंध करते हैं। यदि अशुद्धि में मुनिराजों की भक्ति कर उन्हें आहारदान आदि देते हैं तो कायशुद्धि न होने के कारण कुष्ठरोग से पीड़ित होते हैं। शास्त्र पढ़ने से ज्ञानावरणी कर्म का बंध करते हैं। जाने-अनजाने में अशुद्ध अवस्था में जो भी हमारे द्वारा गुरुओं का अनादर हुआ हो, चारित्र धारियों का अपमान हुआ हो, तीर्थों की वंदना की हो तो उसका प्रायश्चित करना चाहिये। हर धार्मिक कार्य में मन-वचन-काय की शुद्धि होना चाहिये। पाप से छूटने के लिये, मुक्ति पाने के लिये यह 'चंदन

षष्ठी व्रत' हर नर–नारी को वर्ष में एक बार 6 साल तक करना चाहिये। श्रावक श्रद्धा के साथ विवेक अवश्य रखे, मन–वचन–काय की शुद्धिपूर्वक देव–शास्त्र–गुरु की भक्ति करे।

अशुद्धि में कभी भी जिनेन्द्र प्रभु के एवं गुरु के व जिनवाणी के दर्शन नहीं करना चाहिये। शुद्धिपूर्वक गुरु की भक्ति करें, पुण्य का संचय करें।

अशुद्धि में दिया गया दान क्या फल देता है वह इस व्रत की कथा से पता चलता है। जब हम से अशुद्ध अवस्था में कोई धार्मिक काम हो जाता है तो हमारा मन अपराधी बनकर दिन–रात दुःखी करता है, पाप का बोझ बढ़ जाता है। अपराध शांति से सोने भी नहीं देता है, हमारा मन हमें क्षमा नहीं करता, बार–बार गल्तियों को याद दिलता है। आत्मा अंदर से रोती है।

अपराधी व्यक्ति अपने आपको माफ नहीं कर पाता, अन्दर से हमेशा दुःखी रहता है। तनाव में रहता है। कैसे इस पाप से छुटकारा पाऊँ, पाप से बचूँ। अतः पापों से बचने के लिये यह 'चंदन षष्ठी व्रत' आचार्यों ने आगम में बताया है। अवश्यमेव सभी श्रावक–श्राविका इस व्रत का पालन करें, अशुद्धि में किये हुये पापों का प्रायश्चित करें।

सबके लिये चंदनषष्ठी व्रत विधान लिखा है। इस व्रत को करते हुये सभी भक्त प्रभु की भक्ति में तल्लीन होकर सातिशय पुण्य का संचय करें। पापों से मुक्त होकर परमात्म पद को प्राप्त करें। इस विधान में 56 अर्घ हैं और एक पूर्णार्घ है। व्रत पूर्ण होने पर यह विधान करें। विधान लिखने में कुछ त्रुटि हुई हो तो गुण ग्रहण का भाव रखें। पुस्तक प्रकाशक, पाठक मुद्रक सभी को आशीर्वाद।

आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव को त्रय भक्तिपूर्वक नमोस्तु–नमोस्तु–नमोस्तु....

–आर्यिका आस्थाश्री

चंदनषष्ठी व्रत कथा

दोहा– देव नमों अरिहन्त नित, वीतराग विज्ञान।
चन्दनषष्ठी व्रतकथा, कहूँ स्वपर हित मान॥

काशी देश में वाराणसी (बनारस) नाम का प्रसिद्ध नगर है जिसे तेइसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान् ने अपने शुभ जन्म से पवित्र किया था। उसी नगर में किसी समय एक सूरसेन नाम का राजा राज्य करता था। रानी का नाम पद्मनी था।

एक दिन राजा सभा में बैठा था कि वनपाल ने आकर छह ऋतुओं के फल–फूल लाकर राजा को भेंट किये। राजा इस शुभ भेंट से केवली भगवान का शुभागमन जानकर स्वजन और पुरजनों सहित वंदना को गया। भक्तिपूर्वक प्रदक्षिणा दे नमस्कार करके बैठ गया।

श्री मुनिराज ने प्रथम ही मुनिधर्म और पश्चात् श्रावक धर्म का वर्णन किया। उसमें भी सबसे प्रथम सब धर्मों के मूल सम्यग्दर्शन का उपदेश दिया कि वस्तु स्वरूप का यथार्थ श्रद्धान् हुए बिना सब ज्ञान और चारित्र निष्फल हैं। यह वस्तु स्वरूप का श्रद्धान् सत्यार्थदेव (अरिहन्त), सत्यार्थ (निर्ग्रन्थ) गुरु और दयामय (जिनप्रणीत) धर्म में आस्था से ही होता है।

अतएव प्रथम ही परीक्षापूर्वक इनका श्रद्धान् होना आवश्यक है। तत्पश्चात् अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और परिग्रह त्याग से ये पाँच व्रत एकदेश पालन करें तथा इन्हीं के यथोचित्त पालनार्थ सप्तशीलों (तीनों गुणव्रत वा चार शिक्षाव्रतों) का पालन करें, इत्यादि उपदेश दिया। तब राजा ने हाथ जोड़कर पूछा–हे ऋषिराज ! अपनी रानी के प्रति मेरा अधिक स्नेह होने का कारण क्या है? यह सुनकर श्री गुरु ने कहा–

राजन ! सुनो, अवन्ती देश में एक उज्जैन नाम का नगर है। वहाँ वीरसेन नाम का राजा था और उसकी रानी का नाम वीरमती था। इसी नगर में जिनदत्त नामक एक सेठ थे। उसकी जयावती नामक सेठानी से ईश्वरचन्द्र नाम का एक पुत्र भी था जो अपने मामा की सुपुत्री चंदना से पाणिग्रहण कर सुख से कालयापन करता था।

एक समय जिनदत्त सेठ और जयावती सेठानी कुछ कारण पाकर दिगम्बरी दीक्षा ग्रहणकर मुनि आर्यिका हो गये और तप से आयु पूर्ण होने पर तप के माहात्म्य से स्वर्ग में देव व देवी हुये। पिता का पद प्राप्त कर ईश्वरचन्द्र सेठ भी सुख से रहने लगा।

एक दिन अतिमुक्तक नाम के मुनिराज मासोपवास के अनन्तर नगर में पारणा हेतु पधारे। तब ईश्वरचन्द ने भक्तिसहित मुनिराज को पड़गाह कर अपनी धर्मपत्नी से कहा कि श्री गुरुदेव को आहार देओ। तब चंदना बोली–

स्वामिन् ! मैं ऋतुमती हूँ, कैसे आहार दूँ?

ईश्वरचन्द्र ने कहा चुपचाप रहो, शोर मत करो। गुरुदेव मासोपवासी हैं इसलिए शीघ्र पारणा कराओ।

चन्दना ने पति के वचनानुसार मुनिराज को उसी अवस्था में आहार दे दिया। श्री मुनिराज तो आहार करके वन में चले गये और यहाँ तीन ही दिन पश्चात् इस गुप्त पाप का उदय होने से पति–पत्नी दोनों के शरीर में गलित कुष्ट हो गया जिससे वे अत्यन्त दुःखी हुये और कष्ट से दिन बिताने लगे।

एक दिन भाग्योदय से संघसहित श्रीभद्र नामक दिगम्बर जैन मुनि उज्जैन के उद्यान में पधारे। नगर के लोग वंदना को गये और ईश्वरचंद्र भी अपनी भार्या के साथ वंदना को गया। वहाँ भक्तिपूर्वक नमस्कार कर बैठा और धर्मोपदेश सुना। पश्चात् पूछने लगा–

हे दयालो ! हमारे कौन पाप का उदय आया है कि जिससे हमारे यह व्यथा उत्पन्न हुई है? तब मुनिराज ने कहा–

तुमने पात्रदान के लोभ से गुप्त कपट कर ऋतुमती होने की अवस्था में भी आहारदान व मन–वचन–काय शुद्ध है कहकर अतिमुक्तक स्वामी को आहार दिया है अर्थात् तुमने अपवित्रता को भी पवित्रता कहकर चारित्र का अपवाद किया है। इसी पाप के कारण तुम्हारे यह असातावेदनीय कर्म का उदय आया है।

यह सुनकर उक्त दम्पत्ति (सेठ–सेठानी) ने अपने अज्ञात कृत्य पर बहुत पश्चात्ताप किया और पूछा–

भो यतिराज ! अब इस पाप से मुक्त होने का कोई उपाय बताइये। तब श्री गुरु ने कहा–हे भद्र ! सुनो, आश्विन वदी षष्ठी (गुजराती भादों वदी 6) को चारों प्रकार के आहार का त्याग कर, उपवास धारण करो। अष्टद्रव्य से छह पूजा करो। 108 बार णमोकार मंत्र का जाप करो। चार संघ को चार प्रकार का दान देओ। इस प्रकार व्रत करो।

तीनों काल सामायिक तथा अभिषेक, पूजन करो। उपवास के दिन और रात्रिभर आठ पहर तथा धारणा और पारणा के दिन चार पहर ऐसे सोलह पहरों तक घर में आरम्भ, इन्द्रियविषयों व कषायों का त्याग करो।

इस प्रकार छह वर्ष तक यह व्रत करो। पश्चात् उद्यापन करो। जहाँ जैन मंदिर नहीं हो वहाँ जिनालय बनवाओ। छह जिनबिम्ब पधराओ, छह जिनमंदिरों का जीर्णोद्धार कराओ, छह शास्त्रों का वितरण करो। सब प्रकार के 6–6 उपकरण मंदिरों में चढ़ाओ, छह छात्रों को भोजन कराओ। चार प्रकार के (आहार, औषध, शास्त्र और अभय) दान देओ।

इस प्रकार व्रत की विधि सुनकर मुनिराज की साक्षीपूर्वक दम्पत्ति ने व्रत ग्रहण करके विधिसहित पालन किया। कुछ दिन में अशुभकर्म की

निर्जरा होने से उनका शरीर बिल्कुल निरोग हो गया और आयु के अन्त में संन्यासमरण कर वे दम्पत्ति स्वर्ग में रत्नचूल और रत्नमाला नामक देव-देवी हुए। जो बहुत काल तक सुख भोगकर और नन्दीश्वर आदि अकृत्रिम चैत्यालयों की पूजा कर कालयापन करते रहे।

अन्त में आयु पूर्णकर वहाँ से चयकर तुम राजा हुये हो और वह रत्नमाला देवी तुम्हारी पट्टरानी पद्मिनी हुई है। परस्पर तुम दोनों का पूर्वभवों का सम्बन्ध होने से ही विशेष प्रेम हुआ है। यह सुनकर राजा को भव-भोगों से वैराग्य उत्पन्न हो गया। उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र को राज्य देकर मुनिदीक्षा ले ली और घोर तपश्चरण किया जिसके प्रभाव से थोड़े ही काल में केवलज्ञान प्राप्त करके वे सिद्धपद को प्राप्त हुये।

और रानी पद्मिनी के जीव ने भी दीक्षा ली। यह भी तप के प्रभाव से स्त्रीलिंग छेदकर सोलहवें स्वर्ग में देव हुआ। वहाँ से चयकर मनुष्य-भव लेकर मोक्षपद प्राप्त करेगा।

इस प्रकार ईश्वरदत्त सेठ और चंदना ने इस चन्दनषष्ठी व्रत के प्रभाव से नर-सुर के सुख भोगकर मोक्ष प्राप्त किया और भी जो नर-नारी यह व्रत पालेंगे वे भी अवश्य उत्तम पद पावेंगे।

●●●

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– **रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।**
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे॥

3

2 **24**

5

विनय पाठ

(दोहा)

प्रथम जिनेश्वर देव हो, वीतराग सर्वज्ञ।
हित उपदेशी नाथ तुम, ज्ञानरवि मर्मज्ञ॥1॥

केवलज्ञानी बन प्रभो, हरा जगत अंधियार।
तीन लोक के बंधु बन, किया जगत उपकार॥2॥

धर्म देशना से मिला, जग को दिव्य प्रकाश।
तव चरणों में नित रहे, यही करें अरदास॥3॥

कर्म बेड़ियाँ तोड़ने, भक्ति करें त्रयकाल।
तीन योग से हे प्रभो !, चरणों में नत भाल॥4॥

चतुर्गति भव भ्रमण से, तारों हमें जिनेश।
दयानिधि जिन ! कर दया, हरलो पाप विशेष॥5॥

प्रभुवर पूजा आपकी, सर्व रोग विनशाय।
विष भी अमृत हो प्रभो !, शत्रु मित्र बन जाय॥6॥

हलधर बलधर चक्रधर, अर्चा के उपहार।
परम्परा जिनभक्ति से, दे प्रभु पद उपहार॥7॥

बड़े पुण्य से जिन मिले, मिला प्रभु का द्वार।
मुक्त करो त्रय रोग से, विनती बारम्बार॥8॥

हम सेवक प्रभु आपके, हे अबोध ! अनजान।
राग-द्वेष अज्ञान हर, दे दो सच्चा ज्ञान॥9॥

मंगल उत्तम शरण है, मंगलमय जिनधर्म।
मंगलकारी सब गुरु, हरो हमारे कर्म॥10॥

चौबीसों जिनवर नमूँ, नमन पंच परमेश।
जिनवाणी गणधर गुरु, 'आस्था' नमें हमेश॥11॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूजा आरंभ (हिन्दी)

ॐ जय-जय-जय - नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र महिमा

(चौपाई)

अपवित्र या जन पवित्र हो, सुस्थित हो या दुस्थित भी हो।
नमस्कार मंत्रों को ध्यायें, पापों से छुटकारा पायें॥1॥
सर्व अवस्था में भी ध्यायें, पापी भी पावन बन जाये।
जो सुमिरे नित परमातम को, अन्दर बाहर शुचि बने वो॥2॥
अपराजित ये मंत्र कहाता, सब विघ्नों को दूर भगाता।
सब मंगल में मंगलकारी, प्रथम सुमंगल जग उपकारी॥3॥
महामंत्र णवकार हमारा, सब पापों से दे छुटकारा।
सब मंगल में प्रथम कहाता, महामंत्र मंगल कहलाता॥4॥
परम ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, सिद्धचक्र सुन्दर बीजाक्षर।
मैं मन-वच-काया से नमता, नमस्कार मंत्रों को करता॥5॥
अष्टकर्म से मुक्त जिनेश्वर, श्रीपति जिन मंदिर परमेश्वर।
सम्यक्त्वादि गुणों के स्वामी, नमस्कार मैं करता स्वामी॥6॥
जिनवर की संस्तुति करने से, मुक्ति मिले सारे विघ्नों से।
भूतादि का भय मिट जाता, विष निर्विष निश्चित हो जाता॥7॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे॥1॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान
(शंभु छंद)

श्री मज्जिनेन्द्र हो विश्ववंद्य, तुम तीन जगत के ईश्वर हो।
तुम चऊ अनंत गुण के धारी, स्याद्वाद धर्म परमेश्वर हो॥
श्री मूल संघ की विधि से मैं, अपना बहु पुण्य बढ़ाने को।
मैं मंगल पुष्प चढ़ाता हूँ, जिन पूजा यज्ञ रचाने को॥1॥

त्रैलोक्य गुरु हे जिनपुंगव !, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
अपने स्वभाव में सुस्थित जिन, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥
सम्पूर्ण रत्नत्रय के धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
हे समवशरण वैभव धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥2॥

अविराम प्रवाहित ज्ञानामृत, सागर को पुष्प समर्पित है।
निज परभावों के भेद विज्ञ, जिनवर को पुष्प समर्पित है॥
त्रिभुवन को सारे द्रव्यों के, नायक को पुष्प समर्पित है।
त्रैकालिक सर्व पदार्थों के, ज्ञायक को पुष्प समर्पित है॥3॥

पूजा के सारे द्रव्यों को, श्रुत सम्मत शुद्ध बनाया है।
यह भाव शुद्धि के अवलम्बन, द्रव्यों को शुद्ध सजाया है॥
शुचि परमातम का अवलम्बन, आतम को शुद्ध बनाता है।
उसको पाने हे जिन ! तेरी, यह पूजा भव्य रचाता है॥4॥

अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम जिन, उनमें न सचमुच गुरुता है।
मैं भी स्वभाव से उन सम हूँ, मुझमें न निश्चय लघुता है॥

प्रभु से हो एकाकार मेरा, मैं ऐसी भक्ति रचाता हूँ।
केवल ज्ञानाग्नि में अपना, मैं पुण्य समग्र चढ़ाता हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमोऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

वृषभ सुमंगल करे हमारा, अजित सुमंगल करे हमारा।
संभव स्वामी मंगलकारी, अभिनंदन हैं मंगलकारी॥1॥

सुमतिनाथ हैं मंगलकारी, पद्मप्रभु हैं मंगलकारी।
श्री सुपार्श्व जिन मंगलकारी, चंद्रप्रभु हैं मंगलकारी॥2॥

पुष्पदंत हैं मंगलकारी, शीतल स्वामी मंगलकारी।
श्री श्रेयांस जिन मंगलकारी, वासुपूज्य हैं मंगलकारी॥3॥

विमलनाथ हैं मंगलकारी, श्री अनंत जिन मंगलकारी।
धर्मनाथ हैं मंगलकारी, शांतिनाथ हैं मंगलकारी॥4॥

कुंथुनाथ हैं मंगलकारी, अरहनाथ हैं मंगलकारी।
मल्लिनाथ हैं मंगलकारी, मुनिसुव्रत हैं मंगलकारी॥5॥

नमि जिनवर हैं मंगलकारी, नेमीनाथ हैं मंगलकारी।
पार्श्वनाथ हैं मंगलकारी, वीर जिनेश्वर मंगलकारी॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध–बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।2।।

अभिन्नदशपूर्व–चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।3।।

स्पर्श–चक्षु–कर्ण–घ्राण–रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि–यति–ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।4।।

फल–तन्तु–नीर–जंघा–श्रेणी, पुष्प–बीज–अंकुर–रवि–अग्नि–गामी।
नभ–जल–वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।5।।

अणु–महालघु–गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व–वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।6।।

मन औ वचनबल–कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य–अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया–क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।7।।

उग्रोग्रतप–दीप्त–तप–तप्ततपसी, अवस्थित–उग्रतप–महातपऋद्धि।
तपो–लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।8।।

आमर्ष–सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष–दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल–विडजल्ल–मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।9।।

क्षीरास्रवी–घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत–मधु–महारस के धारी।
अक्षीणआलय–महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।10।।

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं

(9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज- हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों॥
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा॥
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन-माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म-जरा-मृत हरता हूँ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना॥ देव शास्त्र..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू ॥ देव शास्त्र..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥4॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया॥ देव शास्त्र..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा॥ देव शास्त्र..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ॥ देव शास्त्र..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है॥ देव शास्त्र..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है॥ देव शास्त्र..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोडूँ सब अभिमान॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा– काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नम: स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय–जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर–नार॥

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ॥
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ॥1॥

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ॥
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि–सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले॥2॥

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत–शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन॥
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन॥3॥

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता॥

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा।।4।।

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन।।
अहिक्षेत्र अणिंदा णमोकार जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर।।5।।

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल केशरिया को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वंदन।।
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी।।6।।

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरूओं को है वंदन।।7।।

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें।।
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

ऋद्धि मंत्र

स्वाहा बोलते हुये प्रत्येक मंत्र में यहाँ पुष्प चढ़ायें या धूप चढ़ायें। विधान करने से पूर्व ऋद्धि मंत्र अवश्य पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥1॥

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहि-जिणाणं
3. णमो परमोहि-जिणाणं
4. णमो सव्वोहि-जिणाणं
5. णमो अणंतोहि-जिणाणं
6. णमो कोट्ठ-बुद्धीणं
7. णमो बीज-बुद्धीणं
8. णमो पादाणु-सारीणं
9. णमो संभिण्ण-सोदारणं
10. णमो सयं-बुद्धाणं
11. णमो पत्तेय-बुद्धाणं
12. णमो बोहिय-बुद्धाणं
13. णमो उजु-मदीणं
14. णमो विउल-मदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस-पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं
18. णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं
19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण-समणाणं
22. णमो आगासगामीणं
23. णमो आसी-विसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्ग-तवाणं
26. णमो दित्त-तवाणं
27. णमो तत्त-तवाणं
28. णमो महा-तवाणं
29. णमो घोर-तवाणं
30. णमो घोर-गुणाणं
31. णमो घोर-परक्कमाणं
32. णमो घोर-गुण-बंभयारीणं
33. णमो आमोसहि-पत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं
35. णमो जल्लोसहि-पत्ताणं
36. णमो विप्पोसहि-पत्ताणं
37. णमो सव्वोसहि-पत्ताणं
38. णमो मण-बलीणं
39. णमो वचि-बलीणं
40. णमो काय-बलीणं
41. णमो खीर-सवीणं
42. णमो सप्पि-सवीणं
43. णमो महुर सवीणं
44. णमो अमिय-सवीणं
45. णमो अक्खीण महाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47. णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

चन्दन षष्ठी विधान मण्डल

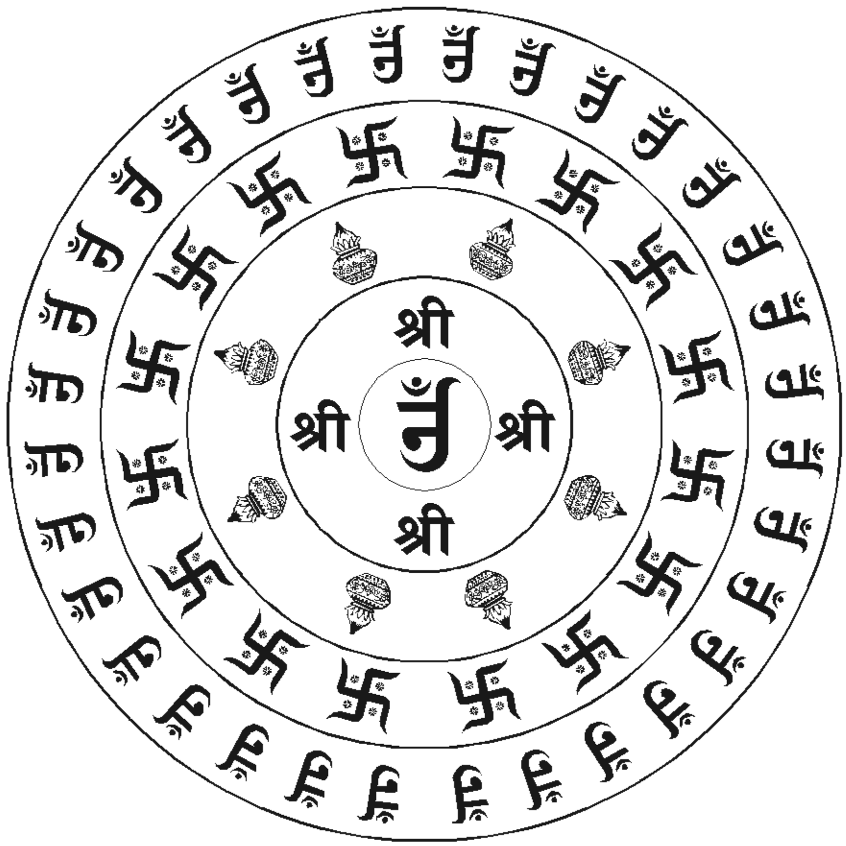

जिन श्रावक-श्राविकाओं को चंदन षष्ठी व्रत का उद्यापन करना हो वे चन्द्रप्रभु भगवान की पूजा छः बार करें।

श्री चंद्रप्रभु पूजा

– आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव

(गीता छन्द)

जय चन्द्रजिन गुणचन्द्र धर, रवि–चन्द्र के प्रतिपाल हैं।
मुनिवृन्द मानव–देव–पशु तुम, द्वार पर नतभाल हैं।।
शशिकांत मणियुत पुष्प ले, आह्वान उनका मैं करूँ।
ग्रह सोम–तिथि–नक्षत्र कृत सब, विघ्न का भंजन करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्र अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(काव्य छन्द)

चन्द्रकांत मणि युक्त, जल के कुंभ सजाऊँ।
तीन रोग क्षय हेत, धारा तीन कराऊँ।।
चन्द्रप्रभु को आज, निश्छल हो मैं ध्याऊँ।
चन्द क्षणों में सर्व, संकट विघ्न नशाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

चन्दन से भी शीत, श्री जिनचन्द्र कहायें।
घिस चन्दन कर्पूर, उनके चरण लगायें।। चन्द्रप्रभु.....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

मुक्ता अक्षत श्वेत, अर्पित प्रभु के आगे।
अक्षयपद हो प्राप्त, क्षत–विक्षत सुख त्यागे।। चन्द्रप्रभु.....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

जूही–पद्म–गुलाब, श्वेत पुष्प ले आऊँ।
हाथ युगल में पुष्प, ले प्रभु चरण चढ़ाऊँ।। चन्द्रप्रभु.....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

श्वेत वर्ण के मिष्ठ, बहु पकवान चढ़ाऊँ ।
क्षुधारोग क्षय हेत, भक्ति नृत्य रचाऊँ ।।
चन्द्रप्रभु को आज, निश्छल हो मैं ध्याऊँ।
चन्द क्षणों में सर्व, संकट विघ्न नशाऊँ ।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

चन्द्रमणि घृत दीप, लेकर आरती गाऊँ।
प्रज्ञादीप जलाय, मोह तिमिर विनशाऊँ ।। चन्द्रप्रभु.....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय महामोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

सर्वौषधि मय धूप, रोग प्रदूषण हारी।
अग्निपात्र में खेय, नाशूँ कर्म बिमारी ।। चन्द्रप्रभु.....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

सरस सुवासित श्रेष्ठ, षट्ऋतु के फल लाऊँ।
नश्वर जग सुख छोड़, शाश्वत शिवफल पाऊँ।। चन्द्रप्रभु.....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

जल आदिक वसु द्रव्य, मिश्रित अर्घ बनाया।
हो अनर्घपद लाभ, इसविध तुम गुण गाया ।। चन्द्रप्रभु.....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

पंचकल्याणक (चौपाई)

चैत वदी पंचम दिन भाया, गर्भ महोत्सव प्रभु का आया।
चंद्रनाथ का यश हम गायें, अर्घ चढ़ाकर पाप नशायें।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णापंचम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री चंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रपुरी में चन्द्रप्रभुजी, जन्मे पूर्ण चन्द्रसम प्रभु जी।
पौष कृष्ण ग्यारस थी प्यारी, वाद्य बजायें सुर नर-नारी।।2।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री चंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युतपात हुआ जब जग में, चन्द्रप्रभु बढ़ते शिवमग में।
पौष वदी एकादश प्यारी, अर्घ चढ़ावें सब नर–नारी॥3॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री चंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रनाथ बन केवलज्ञानी, भव्यों को देते श्रुत वाणी।
दिव्यध्वनि खिरती है न्यारी, पूजा करते सब नर–नारी॥4॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री चंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक हजार ऋषि संग आयें, गिरि सम्मेद शिखर को जायें।
चंद्र बने फिर त्रिभुवनराई, हमने उनकी भक्ति रचाई॥5॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लासप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री चंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **चन्द्रमणि मय कुम्भ से, रजत वर्ण जलधार।**
धवल वर्ण कुंदादि की, पुष्पांजलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा.......दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : **चन्द्रप्रभु जिननाथ को, बारम्बार प्रणाम।**
गाऊँ जय गुणमालिका, सफल होय मम काम॥

(त्रोटक)

जय चन्द्रप्रभु जय–जय स्वामी, वंदन करते मुनि शिवगामी।
जय तीन लोक के भरतारी, जय तुम दर्शन संकटहारी॥1॥

तुम चन्द्रपुरी अवतार लिया, माँ लक्ष्मणा को धन्य किया।
तव जननी हो वह धन्य हुई, जग जननी पद के योग्य हुई॥2॥

स्वर्गों में तब विक्षोभ हुआ, देवों ने कारण शोध लिया।
सौधर्म शचि संग आन खड़े, जिन मात-पिता के शरण पड़े॥3॥

मेरु पर तव अभिषेक हुआ, भव्यों को दर्शन लाभ हुआ।
राजा का पद स्वीकार किया, सुख-शांति का विस्तार किया॥4॥

दोषों का ताप हरा उनने, सत् न्याय प्रचार करा उनने।
फिर जगसुख नश्वर भान हुआ, और आतमसुख का ज्ञान हुआ॥5॥

तब मुनिपद उनने धार लिया, संसार सलिल को पार किया।
तीर्थंकर बनकर प्रभुवर ने, जिन तीर्थ बताया फिर तिरने॥6॥

गिरि सम्मेदाचल गये प्रभो, सब दूर भगायें कर्म विभो।
प्रभु योग निरोध किया वन में, अरु सिद्ध बने वे कुछ क्षण में॥7॥

जिनवर की अनुपम है महिमा, तब शरणागत पाये गरिमा।
गुरु भद्रसमन्त प्रणाम किया, भूमण्डल पर यशगान किया॥8॥

सोनागिरी देहरा आदि में, सम्मेदशिखर बड़वानी में।
सब क्षेत्र बड़े मनहारी हैं, दुखियों के संकटहारी हैं॥9॥

प्रभु मेरा संकट त्रास हरो, मम हृदय-कमल में वास करो।
कुछ भौतिक सुख की चाह नहीं, मैं चाहूँ भव की राह नहीं॥10॥

मैं साम्यभाव को प्राप्त करूँ, मम ज्ञानसूर्य को व्याप्त करूँ।
यह 'गुप्तिनन्दी' जिनभक्ति करें, जिनपद में रह शिवशक्ति वरे॥11॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धत्ता : जिन प्रभुवरचंदा, नाथ जिनन्दा, विनय सहित तुम शरण खड़े।
दुःख भंजनकारी, संकटहारी, हे त्रिपुरारि ! भक्ति करें॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चंदनषष्ठी व्रत विधान

(नरेन्द्र छंद)

श्री चंदनषष्ठी व्रत नायक, चंद्रनाथ को ध्यायें।
चंदन षष्ठि व्रत अपनाकर, प्रभु की भक्ति रचायें।।
मन-वच-काया शुद्धि पूर्वक, इस व्रत को अपनायें।
पुष्पों से आह्वान करें हम, प्रभु को हृदय बसायें।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्ल छंद)

स्वर्ण कलश में निर्मल जल भर ला रहे।
त्रय रोगों से मुक्ति पाने आ रहे।।
चंद्रनाथ की करते हम आराधना।
प्रभु पूजन से होती पाप विराधना।।1।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन से भी शीतल हैं प्रभु के चरण।
चंदन चरण लगायें मेटें भव भ्रमण।। चंद्रनाथ...।।2।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयपद अक्षय पद दाता से मिले।
उनकी पूजा भक्ति करने हम चले।। चंद्रनाथ...।।3।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चुनकर लायें रंग-बिरंगे फूल हम।
फूल चढ़ाकर पायें प्रभु पद धूल हम।। चंद्रनाथ...।।4।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बरफी फैनी मधुर इमरती पूड़ियाँ।
प्रभु की पूजा से मिटती भव दूरियाँ।।
चंद्रनाथ की करते हम आराधना।
प्रभु पूजन से होती पाप विराधना।।5।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी जग-मग करती दीपावली।
आरती करके पायें सुख की छावली।। चंद्रनाथ...।।6।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशों दिशायें महक उठी इस धूप से।
धूप चढ़ाकर बच जायें भव कूप से।। चंद्रनाथ...।।7।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल केला आम जाम व रामफल।
फल की अर्चा से मिलता है मोक्षफल।। चंद्रनाथ...।।8।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

छम-छम नाचे-गायें प्रभु भक्ति करें।
अर्घ चढ़ाकर हम अपने संकट हरें।। चंद्रनाथ...।।9।।

ॐ ह्रीं चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारम्भ

दोहा- चंदन षष्ठी व्रत करें, करते भव्य विधान।
शुद्धि से प्रभु को भजें, कहते सब भगवान।।

अथ मंडलस्योऽपि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

शेर छंद (तर्ज : हे दीनबंधु श्रीपति...)

जिनमात देखती है सोलह स्वप्न रात में।
स्वप्नों का फल बताये पिता सुप्रभात में।।

विशेष नोट- इस व्रत में चन्द्रप्रभु भगवान की ही 6 बार पूजा करें।

आकर के अष्ट देवियाँ माता को सजायें।
हम अर्घ चढ़ा आज गर्भ पर्व मनायें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं गर्भमंगल मण्डिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवतार लेके नाथ ने सबको जगा दिया।
क्षणमात्र को त्रिलोक से सब दुःख भगा दिया।।
सौधर्म ने जिन राज का अभिषेक रचाया।
हमने चढ़ाके अर्घ वही पुण्य कमाया।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं जन्ममंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार को असार जान वन को चल दिये।
केशों का लोच करके प्रभु आत्मरस पिये।।
मुद्रा प्रभु की त्याग का संदेश दे रही।
अनुमोदना दीक्षा की करें भाव से यही।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं तपोमंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के समवशरण में सभी भव्य आ रहे।
शुभ दर्श पाके आप से सम्यक्त्व पा रहे।।
श्री केवली भगवान की हम आरती करें।
कीर्तन करें वंदन करें, पर मन नहीं भरे।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानमंगल मण्डिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवान तीर्थनाथ हमें पास बुलायें।
भगवान शब्द मात्र ही भव पार लगाये।।
भगवान भव से तर गये भव्यों को तारते।
हम भव्य प्राणी आपको मन से पुकारते।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षमंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर का गर्भ जन्म हुआ चंद्रपुरी में।
उत्सव मनाने आये देव स्वर्गपुरी से।।
मधुवन से मोक्ष पा लिया भगवान आपने।
हम अर्घ चढ़ा भक्ति करें पाप नाशने।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचकल्याणक पूजिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत इन्द्र पूजते सदैव चंद्रनाथ को।
हम अर्घ चढ़ा नमन करें चंद्रनाथ को।।
हमसे हुई अशुद्धि उनकी माँगते क्षमा।
सब पाप दोष कष्ट हरो माँगते क्षमा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं शतेन्द्र पूज्याय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस तीर्थ-नगर-क्षेत्र चन्द्रनाथ विराजे।
अतिशय वहाँ पे होय बजे नित्य ही बाजे।।
इस व्रत में होती है विशेष चंद्र अर्चना।
हम नाथ आपकी करें त्रिकाल वन्दना।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वक्षेत्र विराजित त्रिकाल पूजिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मन शुद्धि को छोड़कर, की पूजा अभिषेक।
क्षमा करो हे नाथ ! अब, पूजें भक्त विशेष।।
शुद्धि से सिद्धी मिले, कहते चन्द्र जिनेश।
पूजें हम वसु द्रव्य से, हरलो सब दुःख क्लेश।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनकृत अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों से हमने किया, बिना शुद्धि गुणगान।
पाप बंध उसमें किया, रहा नहीं कुछ भान॥
शुद्धि से सिद्धी मिले, कहते चन्द्र जिनेश।
पूजें हम वसु द्रव्य से, हरलो सब दुःख क्लेश॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं वचनकृत अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया को धोया मगर, किया नहीं मुख शुद्ध।
शुद्ध वस्त्र धारण किये, छूकर किये अशुद्ध॥ शुद्धि..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं कायकृत अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किये विधान बड़े-बड़े, तजकर शुद्धि विवेक।
भोजन पानी ले लिया, भूले वस्त्र विवेक॥ शुद्धि..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं पूजा विधाने अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छींक जंभाई खाँसी में, करके वस्त्र अशुद्ध।
पाप बंध हमसे हुआ, कैसे हो हम शुद्ध॥ शुद्धि..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थों में हम जब गये, परिजन संग ले साथ।
खा पीकर हम पेट भर, गये प्रभु के पास॥ शुद्धि..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थक्षेत्रे अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुओं के आहार में, पहने वस्त्र न शुद्ध।
झूठ बोल शुद्धि कहे, मन-वच-काय अशुद्ध॥ शुद्धि..॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं पात्र दान संबंधि अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पूजा स्वाध्याय में, तन अशुद्ध जब होय।
छिपा लिया वह दोष जब, तन कुष्ठी तब होय॥
शुद्धि से सिद्धी मिले, कहते चन्द्र जिनेश।
पूजें हम वसु द्रव्य से, हरलो सब दुःख क्लेश॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं देवपूजा स्वाध्याय संबंधि अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन तो मैला कर लिया, तन भी मैला होय।
वचनों से शुद्धि कहें, तीनों शुद्ध न होय॥ शुद्धि..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं मन–वच–काय कृत सर्व अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृतकारित अनुमोदना, अच्छा बुरा दिखाय।
मन–वच–काया तीन ये, पुण्य–अपुण्य दिलाय॥ शुद्धि..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं नवकोटी जनित दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप छिपाकर जो किये, इक दिन बाहर आय।
घड़ा पाप का फूटता, सबको ही दिख जाय॥ शुद्धि..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं पापान्धकार निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप छिपाये ना छिपे, छिपे ना कोई रोग।
शुद्धि से प्रभु भक्ति कर, मिट जायें सब रोग॥ शुद्धि..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनभक्ति संबंधि सर्व दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झूठ बोलकर दे दिया, मुनिवर को आहार।
कोड़ होय जब देह में, करते कर्म प्रहार॥ शुद्धि..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं असत्य वचन संबंधि अशुद्धि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसात्मक सामग्री से, सजा रहे जो काय।
उसमें जिन-गुरु भक्ति कर, दुःखकर पाप कमाय॥
शुद्धि से सिद्धी मिले, कहते चन्द्र जिनेश।
पूजें हम वसु द्रव्य से, हरलो सब दुःख क्लेश॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं अशुद्ध कायसंबंधि सर्वदोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवली गुरु श्रुत देव पर, करते जो अपवाद।
दर्शन मोह कुकर्म भी, देता उन्हें विषाद॥ शुद्धि..॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं देव-शास्त्र-गुरु संबंधि सर्व अपवाद दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की निंदा जो करे, या करते अपमान।
उसकी दुर्गति हो अवश, होगा ना कल्याण॥ शुद्धि..॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं गुरु निंदा संबंधि सर्व दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मधु माँस व्यसनी अगर, करते पूजा पाठ।
उनको दुर्गति दुःख मिले, मिले नरक का ठाठ॥ शुद्धि..॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं सप्त व्यसन संबंधि सर्व दुर्गति पाप निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यसनी हो प्रभु को भजे, पाये कष्ट अनेक।
पाप छिपाने अघ करे, लेकिन नहीं विवेक॥ शुद्धि..॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं अधर्म पाप निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गठरी बाँधे पाप की, कुल में दाग लगाय।
जन्मा जिन कुल में मगर, जैन नहीं बन पाय॥ शुद्धि..॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं कुल कलंक दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होटल में भोजन किया, चाय कॉफी के साथ।
विषय लोलुपी बन किया, पाप बंध हे नाथ !॥
शुद्धि से सिद्धी मिले, कहते चन्द्र जिनेश।
पूजें हम वसु द्रव्य से, हरलो सब दुःख क्लेश॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं अशुद्ध भोजन संबंधि दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत उपवास अनेक कर, किया मंत्र का जाप।
दर्शन पूजा सब किया, मन को किया न साफ॥ शुद्धि..॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं मन संबंधि सर्वपाप निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैन धर्म जिन कुल मिला, पाई उत्तम देह।
लगे रहे नित भोग में, व्यर्थ गंवाई देह॥ शुद्धि..॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं अति आसक्ति दोष निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब तक काय निरोग थी, किया नहीं कल्याण।
जरा रोग तन में लगा, कैसे हो कल्याण॥ शुद्धि..॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं देह व्याधि निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धोखा छल अन्याय व, ईर्ष्या अत्याचार।
स्व हिंसा पर घात कर, किया पाप व्यापार॥ शुद्धि..॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं छल-कपट, राग-द्वेष, ईर्ष्या-पाप निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

मन रोगी का मन है चंचल, रोग मानसिक कहलाये।
मन से सोचा बुरा अगर जो, ऐसे रोग उभर आये॥

ऐसे रोग नशाने भगवन, अर्चा करने हम आये।
सर्व रोग से मुक्ति पाने, हम विधान करने आये॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं मानसिक रोगहराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो शिरशूल दर्द व चक्कर, शिर के रोग अनेकों हों।
अति तनाव में टेंशन होता, बुद्धि विकार अनेकों हों॥
बुद्धि रहे सदा सद्बुद्धि, यही भावना हम भायें॥ सर्व रोग..॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं शिर शूल तनाव आदि सर्वरोग हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस काया के किसी अंग में, जब कैंसर हो जाता है।
महारोग का नाम सुने वो, जीव शीघ्र मर जाता है॥
हमने करी अशुद्धि भगवन्, रोग इसी कारण आये॥ सर्व रोग..॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं कैंसर आदि रोग हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत दाग काया पे होते, दिखती काया अधी जली।
चर्म रोग व लाल दाग से, मुरझाती है हृदय कली॥
कुष्ठ रोग होता अशुद्धि से, शुद्धि से प्रभु को ध्यायें॥ सर्व रोग..॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं कुष्ठ आदि रोगहराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाव-विभोर भक्ति करते पर, शुद्धि का कुछ ज्ञान नहीं।
कर्म वेदनी अति दुःख देता, बी.पी. शूगर बड़े वहीं॥
ऐसे राज रोग से बचने, प्रभु की पूजा रचवायें॥ सर्व रोग..॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं बी.पी. शुगर आदि वेदनीय कर्मजनित सर्वरोग हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन के राग-द्वेष ही हमको, पाप बंध करवाते हैं।
मलिन हो गया मन मंदिर ये, हृदय गति रुकवाते हैं॥
तन अच्छा है जब तक अपना, देव-शास्त्र-गुरु को ध्यायें॥ सर्व रोग..॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं रागद्वेष पापजनित हृदयादि सर्वरोग हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होय अटैक अचानक तन पे, किडनी लीवर साथ न दे।
पेट में पथरी किड़नी बिगड़ी, तन भी अपना साथ न दे॥
जो-जो भी अपराध हुये हैं, क्षमा माँगने हम आये॥
सर्व रोग से मुक्ति पाने, हम विधान करने आये॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हं किडनी लीवर आदि उदर संबंधि सर्वरोग हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञात और अज्ञात भाव से, हमसे दुष्कर पाप हुआ।
उनका फल पाया जब हमने, हमको बहु संताप हुआ॥
उन कर्मों के बंध छुड़ाने, हम श्री जिनवर को ध्यायें॥ सर्व रोग..॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञाताज्ञात भावकृत सर्वदोष हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं नहीं खाते जो वस्तु, खिला रहे व्यापार किया।
भक्ष्याक्ष्य विवेक छोड़कर, तन को मरघट बना लिया॥
पेट महारोगी हो इससे, मौत सामने आ जाये॥ सर्व रोग..॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं भक्ष्याभक्ष्य भोजन संबंधि सर्वदोष हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन भी जावे धन भी जावे, ऐसा रोग कभी ना हो।
देव गुरु की भक्ति करें नित, हमको रोग कभी ना हो॥
कोमा लकवा हो ना तन में, स्वस्थ शरीर सभी पायें॥ सर्व रोग..॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं कोमा-लकवा आदि सर्वरोग हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोम-रोम में रोग लगे हैं, सर्व अंग अति पीड़ित हैं।
आँख नाक व कर्ण दाँत के, रोगों से हम पीड़ित हैं॥
सर्दी खाँसी कंठ पीठ व, दर्द कमर में ना आये॥ सर्व रोग..॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वाङ्ग रोग हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-भव से जो कर्म बंधे हैं, वो भी अब प्रभु नश जायें।
हो ना हमसे नाथ अशुद्धि, ऐसी प्रज्ञा जग जाये।।
प्रभु भक्ति ही पार लगाती, दुर्गति में हम ना जायें।
सर्व रोग से मुक्ति पाने, हम विधान करने आये।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्बुद्धि प्रदायकाय सर्व अशुद्धि हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य बढ़ाने के जो साधन, प्रभु भक्ति गुरु की सेवा।
पूजा दान करें हम निशदिन, मिले भक्ति का नित मेवा।।
संकट-पीड़ा-कष्ट मिटाने, हम भी प्रभु के गुण गायें।। सर्व रोग..।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं संकट पीड़ा कष्ट निवारणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धि ही सिद्धि को देती, प्रभु व गुरुवर बतलायें।
सही मार्ग पे जो नित चलते, दुःख में कभी ना घबरायें।।
संकट की घड़ियों में भी हम, रंच न विचलित हो जायें।। सर्व रोग..।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व अशुद्धि दुःखहरणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत उपवास आदि के द्वारा, कर्म कटेंगे शास्त्र कहें।
दान धर्म समता रखने से, शूल हटेंगे शास्त्र कहें।।
पापों की हम निंदा करते, आलोचन करने आये।। सर्व रोग..।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पापहराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव देवों की पूजा भक्ति, करने में जो दोष हुये।
इसी पाप के कारण हमको, इस काया में रोग हुये।
काय निरोगी रहे हमारी, रत्नत्रय हम भी पायें।। सर्व रोग..।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरोग शरीर प्रदायकाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानव का तन है अति उत्तम, अच्छे उत्तम कार्य करें।
इसी गति को पाकर प्राणी, मुक्ति का सोपान वरे॥
कर्म कालिमा पाप वर्गणा, जिन भक्ति से विनशायें।
सर्व रोग से मुक्ति पाने, हम विधान करने आये॥49॥

ॐ ह्रीं अर्हं कर्म कालिमा पाप वर्गणा हरणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्गति दुर्गति मिले यही से, पुण्य-पाप हमने बाँधा।
शुद्धि अशुद्धि करे मनुज ही, पाप रोग बनकर आता॥
खोटे अशुभ करम विनशाने, प्रभु चरणों में हम आये॥ सर्व रोग..॥50॥

ॐ ह्रीं अर्हं दुर्गति निवारणाय सद्गति प्रदायकाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य क्षेत्र और काल भाव भी, शुद्ध जहाँ नहिं होते हैं।
धर्म कार्य कर लेने पर भी, बीज पाप के बोते हैं॥
पुण्य कमायें प्रभु भक्ति से, पाप नशाने हम आये॥ सर्व रोग..॥51॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व क्षेत्रादि अशुद्धि निवारकाय पुण्य वृद्धि कराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप उदय में आता है जब, बिलख-बिलख कर रोते हैं।
कैसे दुःख की घड़ियाँ बीते, चिंता में ना सोते हैं॥
हे भगवन् ! इन दुःख से तारों, हम सब चरणों में आये॥ सर्व रोग..॥52॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतिदुःख त्रास हराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप कर्म की लीला अद्भुत, पुण्य पाप बन जाता है।
धर्म कार्य करने वाला भी, दुःखी नजर अब आता है॥
ऐसे कर्म हमारे क्षय हो, निशदिन हम प्रभु गुण गायें॥ सर्व रोग..॥53॥

ॐ ह्रीं अर्हं अधर्म पाप हराय धर्मवृद्धि कराय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूतक पातक जब हो घर में, भूल स्वयं हम करते हैं।
मंदिर जाते माला जपते, गंधोदक ले लेते हैं।।
सूतक पातक जो ना पाले, वो भी निश्चित दुःख पाये।
सर्व रोग से मुक्ति पाने, हम विधान करने आये।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं सूतक पातक संबंधी अशुद्धि दोष हरणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म उदय आता पापों से, भक्ति से ही कर्म कटें।
जो कर्मों से नहीं घबराते, उनके निश्चित कर्म कटें।।
कर्म उदय में ना घबराये, ऐसी हम शक्ति पायें।। सर्व रोग..।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनभक्तिरूपी शक्ति प्रदायकाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस काया को स्वस्थ बनाने, आगम की आज्ञा पालें।
शिर से लेकर पैरों तक के, रोग देव भक्ति टाले।।
हमसे जो भी दोष हुये प्रभु, क्षमा माँगने हम आये।। सर्व रोग..।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वांग काया स्वस्थ करणाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (गीता छंद)

केलादि फल के गुच्छ संग, श्रीफल ध्वजादि ला रहे।
पुष्पादि माला दीप संग, पूर्णार्घ इन्द्र चढ़ा रहे।।
सम्पूर्ण रोगों को हरे, जिनराज की ये अर्चना।
सुख शांति जिनगुण प्राप्त हो, इस हेतु करते वंदना।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व अशुद्धि, रोग, कष्ट, पीड़ा, दुःख, अशांति, क्लेश, संकट, शोक, कोरोना महाव्याधि निवारणाय सुख-समृद्धि, शांति, आरोग्य, बुद्धि, ऋद्धि-सिद्धी, धन-धान्य सौभाग्य प्रदायकाय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : भक्ति भाव का नीर ले, आये प्रभु के द्वार।
प्रभु के पद प्रक्षाल से, मिलती शांति अपार॥

शांतये शांतिधारा

दोहा : पुष्पों से कोमल अति, तीर्थंकर जिनराज।
हृदय पुष्प पुलकित हुआ, पुष्प चढ़ाके आज॥

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– (1) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री चन्द्रप्रभ तीर्थंकराय श्यामयक्ष ज्वालामालिनी देवी सहिताय नमः स्वाहा। अथवा (2) ॐ ह्रीं चन्दनषष्ठी व्रतोद्यापने श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (3) ॐ ह्रीं चन्दनषष्ठी व्रताधिपति श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा।

जयमाला

दोहा : चंदन षष्ठी व्रत करें, हम सब हे भगवान !।
जयमाला व्रत की पढ़ें, पायें मुक्ति महान्॥

चौपाई

जय-जय हो तीर्थंकर स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।
जयमाला ये मंगलकारी, प्रभु की भक्ति है सुखकारी॥1॥
चंदन षष्ठी व्रत अपनाये, काया चंदन सी महकाये।
जो कोई इस व्रत को पाले, परम्परा से शिव सुख पाले॥2॥
एक शहर उज्जैन कहाये, ईश्वर प्रभु के भक्त कहायें।
वहाँ श्रमण अतिमुक्तक आये, मास-मास उपवास रचायें॥3॥
ईश्वरचंद उन्हें पड़गाये, निज भार्या को पास बुलाये।
बोला हम गुरु को ले आये, दोनों मिल आहार करायें॥4॥
भय से पत्नी ने मुँह फेरा, कहे अपावन यह तन मेरा।
मैं गुरु को आहार न दूँगी, पाप बंध मैं नहीं करूँगी॥5॥

सेठ कहे चुप रह सेठानी, मैंने तो आहार की ठानी।
जाओ जल्दी थाली लाओ, गुरुवर को आहार कराओ॥6॥
अशुद्ध तन चर्या करवाये, चर्या कर गुरु वन में जाये।
तीन दिवस जैसे ही होते, कुष्ठ रोग से दोनों रोते॥7॥
गुप्त पाप उदयागत आया, तन में कोढ़ निकलकर आया।
बड़े कष्ट से समय बिताये, पुण्य उदय से मुनि संघ आये॥8॥
भद्रगुरु के दर्शन पाये, गुरु को अपनी व्यथा सुनाये।
कोढ़ हुआ क्यों हमको स्वामी, आप बताओ अन्तर्यामी॥9॥
तब गुरुवर उनको बतलाये, उनका दोष सहज समझायें।
तुमने छल से दान दिया था, संयम का अपमान किया था॥10॥
वही पाप उदयागत आया, गले कोढ़ से अब तुम काया।
पश्चात्ताप उन्हें तब आया, उनने गुरु को शीश झुकाया॥11॥
बोले हमको मार्ग दिखाओ, दुःख संकट से मुक्त कराओ।
गुरु ने करुणा भाव दिखाया, चंदन षष्ठी व्रत दिलवाया॥12॥
भादो कृष्णा छठ जब आये, वो ही चंदन छठ कहलाये।
दोनों इस व्रत को अपनाओ, कंचन सम उत्तम तन पाओ॥13॥
श्री गुरुवर से व्रत अपनाया, छह अनशन कर पुण्य कमाया।
विधिवत इस व्रत को अपनाया, उत्तम उद्यापन करवाया॥14॥
व्रत से सुन्दर तन को पाया, धार समाधि सुर-तन पाया।
ईश्वर नृप बन मुनिव्रत धारें, तद्भव से वो मोक्ष पधारें॥15॥
चंदन बनी पद्मिनी रानी, उसकी थी ये बड़ी कहानी।
बनी आर्यिका फिर वो रानी, छेदे स्त्रीलिंग प्रधानी॥16॥
पुनः मनुज तन जब वो पाये, निश्चित श्रेष्ठ सिद्ध पद पाये।
एक बार जो व्रत अपनाता, सर्व दुःखों से मुक्ति पाता॥17॥
मन के साथ वचन की शुद्धि, वचनों के संग तन की शुद्धि।
शुद्धिपूर्वक गुरु की भक्ति, देती है पापों से मुक्ति॥18॥

चंदन षष्ठी व्रत अपनायें, 'आस्था' से प्रभु के गुण गायें।
चन्द्रनाथ जिन को हम ध्यायें, गुप्ति समिति धर शिवसुख पायें॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व अशुद्धि, रोग, कष्ट, पीड़ा, दुःख, अशांति, क्लेश, संकट, शोक, कोरोना महाव्याधि निवारणाय सुख-समृद्धि, शांति, आरोग्य, बुद्धि, ऋद्धि-सिद्धी, धन-धान्य सौभाग्य प्रदायकाय चंदनषष्ठि व्रताधिपति श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : **चंद्रनाथ जिनराज का, करते हम गुणगान।**
गुप्ति समिति व्रत पालकर, बन जायें भगवान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ

श्याम यक्ष

(अडिल्ल छंद)

श्याम यक्ष श्री चंद्रप्रभु को ध्या रहे।
प्रभु की पूजा भक्ति यक्ष रचा रहे॥
श्याम यक्ष को अर्घ समर्पण हम करें।
वो उनके दुःख हरते जो श्रद्धा करें॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं चंद्रप्रभ जिनशासन प्रभावक श्री श्याम यक्षाय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

ज्वालामालिनी यक्षिणी

(अडिल्ल छंद)

चंद्रप्रभु की यक्षी ज्वाला मालिनी।
जिन शासन की रक्षक ज्वाला मालिनी॥
जिनशासन का ध्वज माता फहरा रही।
उन्हें पूजने भक्त टोलियाँ आ रही॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं चंद्रप्रभ जिनशासन सेविका श्री ज्वालामालिनी यक्ष्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

विधान प्रशस्ति

अडिल्ल छंद

वृषभादि चौबीस नाथ को है नमन।
चंद्रप्रभु को करते हैं शत्–शत् नमन॥
सरस्वती माँ गणधर गुरुओं को नमन।
कुंथु–कनक–गुप्तिनंदी गुरु को नमन॥1॥

चंदनषष्ठी व्रत का भव्य विधान ये।
अल्प समय में पूर्ण हुआ सु विधान ये॥
गुप्ति गुरु ने इसका संपादन किया।
हमने इसको भक्ति से निर्मित किया॥2॥

इस वसुधा पे जब तक सूरज–चाँद हैं।
भव्यों द्वारा ये विधान होता रहे॥
इस विधान की महिमा अपरम्पार है।
''आस्था'' का प्रभु वंदन बारम्बार है॥3॥

***

आरती

(तर्ज – ना कजरे की धार ना...)

श्री चंद्रनाथ भगवान, करते हम सब गुणगान।
लेकर दीपों की थाल, करते मंगल आरती आज॥–2
हो हो.. आ–आ..

चंदन षष्ठी व्रत धारें, अपने सब अघ परिहारें–2
चंदा प्रभु की पूजा कर, नर–नारी व्रत स्वीकारें॥
इस व्रत को, श्रद्धा से–2, पालन करते नर–नार॥1॥
श्री........

भादो कृष्णा षष्ठी को, इक वर्ष में व्रत ये आता–2
विधिपूर्वक व्रत जो करता, वो मोक्ष लक्ष्मी पाता॥
चंदा प्रभु की, पूजा करके–2, पाते हम सौख्य अपार॥2॥
श्री........

चंदन षष्ठी का हम सब, पूजन–विधान करते हैं–2
करते व्रत का उद्यापन, चंदन सम सुख वरते हैं॥
''आस्था'' से, हम आये–2, हे चन्द्र प्रभु ! तव द्वार॥3॥
श्री........

***

समुच्चय अर्घ

(शेर छंद)

मैं पूजता अरिहंत सिद्ध सूरि को सदा।
उवज्झाय सर्व साधु और शारदा मुदा।।
गणधर गुरु चरण की नित्य अर्चना करूँ।
दश धर्म सोलह भावना की अर्चना करूँ।।1।।

अरहंत भाषितार्थ दया धर्म को भजूँ।
श्री तीन रत्न रूप मोक्ष धर्म को जजूँ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य को ध्याऊँ।
चैत्यालयों का ध्यान लगा अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

सब सिद्ध क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र को भजूँ सदा।
औ तीन लोक के समस्त तीर्थ सर्वदा।।
चौबीस जिनवरों व बीस नाथ को ध्याऊँ।
जल आदि अष्ट द्रव्य ले पूर्णार्घ चढ़ाऊँ।।3।।

दोहा : जल आदिक वसु द्रव्य की, लेकर आये थाल।
महाअर्घ अर्पण करें, प्रभु को नमें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप

संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, धर्मतीर्थ, वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव णमोकार ऋषि तीर्थ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत-भविष्यत-वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे..................... प्रान्ते-नगरे........... मासानांमासे.........मासे.........पक्षे.........तिथौ..........वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छवास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते रहें)

शशि सम निर्मल जिन मुखधारी, शील सहस्र गुणों के धारी।
लक्षण वसु शत त्रयपदधारी, कमल नयन शांति सुखकारी।।1।।

(नोट-यहाँ शांतिधारा करें।)

शांतिनाथ पंचम चक्रीश्वर, पूजें तुमको इन्द्र मुनीश्वर।
शांति करो हे शांति ! जिनेश्वर, जगत् शांतिहित नमते गणधर।।2।।
आठों प्रातिहार्य मनहारी, ये जिन वैभव हैं सुखकारी।
तरु अशोक पुष्पों की वर्षा, दिव्य ध्वनि सिंहासन रवि सा।।3।।

छत्र चँवर भामंडल चम-चम, देव-दुंदुभि बजती दुम-दुम।
शांति करो त्रय जग में स्वामी, शीश झुकाता तुमको स्वामी॥4॥
आप अनंत चतुष्टय धारी, मंगल द्रव्य आठ अघहारी।
सर्व विघ्न प्रभु आप नशाओं, हे शांति प्रभु ! शांति दिलाओ॥5॥
पूजक राजा शांति पायें, मुनि तपस्वी शांति पायें।
राष्ट्र नगर में शांति छाये, शांति जगत् में हे जिन ! आये॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(दोनों हाथ में चावल या पुष्प लेकर करबद्ध हो विसर्जन पाठ पढ़ें मंत्र के साथ पुष्पाञ्जलि करें)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

जाने अनजाने हुई, प्रभु पूजा में चूक।
मैं अज्ञान अबोध हूँ, क्षमा करो सब चूक॥1॥
जानूँ नहीं आह्वान मैं, पूजा से अनजान।
ज्ञान विसर्जन का नहीं, क्षमा करो भगवान॥2॥
अक्षर पद और मात्रा, व्यंजनादि सब शब्द।
कम ज्यादा कुछ कह दिया, छूट गये हों शब्द॥3॥
मिथ्या हो सब दोष मम, शरण रखो भगवान।
तव पूजा करके प्रभु, बन जाऊँ भगवान॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः-3जः-3स्वाहा।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(9 बार णमोकार का जाप करें।)

(नोट-दीपक लेकर श्रीजी की मंगल आरती करें।)

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : गंध पुष्प प्रभु रज यही, इसको शीश झुकाय।
पुष्प लिये आह्वान के, अपने शीश लगाय॥

(तुभ्यम् नमस्त्रि बोलते हुये भगवान को गुरु को नमस्कार करें।)

***